

285
Sto tras

આખર કાવ્ય
2009 I

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

XXXXX

नरक १२

ॐ नमः श्रीरुवाये ॥ पूनासाधिम (ध) मूत्र लो ॥ १२ ॥ अक पापामिदं कृतं ने ॥ १३ ॥ वरु को ॥ १४ ॥ यत
संज्ञगत्यं च तत्ताम विध्यं नमस्तु नमस्तु समस्त क नृप ॥ रु निस्तु क वे या न नृ प
सा दा लु सं व्र गन सं प च क । रु नो ही न रु नो हि य स्या स्तु द (ध) नमस्तु नमस्तु
मस्तु क नृप ॥

१ श्री गणेशाय नमः ॥ या या दु क न मा उ र्ज ० न कू रु न जा चा न मू ण मि मूर्च्छ क
 द क्रि द्वा ल मा ला वि क लि ति व पू षा या द गी य रु क्ष सा न आ र्था र्थे वा नि त व्या
 स दू त न म न सा क न चि मा द ग्ग वा न य अ क्राम य ना (क्ष) ज न नि ज य नि (ध) सि
 क्षि त क्रि य सी द ॥ १ ॥ ता द कू ल ना दि ही न क्षि ग त न वि ष य स्वा वि ला क्षि त्र द रु
 वी णा र्था ना द ग क्का द ति ग य नू द ति की न या ना रि ला षे वा ल्य धी न य न य सि
 ति न वि द्य त न ने व नि र्वा ण द गु ण न य अ क्राम य ना (क्ष) ज न नि ज य नि (ध) ना ट क नि

ये सी द ॥ २ ॥ स म्य र्था यो व ना द्ये न रु मि ति म न सा मा नि ता ने व क श्चि त् का ना ना
 का म क ली म य न स रु ज ना स्त्रा सि ता स्त्रा रु ज स्म नि वा र्था व द्य व द्य क्रि त म वि
 रु व ती मा रु जा ला व नू द्वा न य अ क्राम य ना (क्ष) ज न नि ज य नि (ध) शानि (ग) नि य सी
 द ॥ ३ ॥ का स स्त्रा सा ति कू कु य म् रा व न द म य ल्य न जी (लु) ज ना ना या न या ला धि द (लु)
 ग न चू चि रु द य चि त्त यी चि रु नू च्य । म ऊ र्त् की ना ग या (ग) नि ज म लु क लि त वा र्ध
 क व र्द्धि ता (क्ष) न य अ क्राम य ना (क्ष) ज न नि ज य नि (ध) कू डि क श य सी द ॥ ४ ॥

आ। न ना जा न नू क ४ शुति वि वि वि मुख ४ स्मार्त मा गी व ग क ४ सा र्वा दो ग कि ही
ना न य वि न य क थ क र्त्तु न क र्त्तु न य ४ वा ली मूर्त र व र्णा र जन म न न या धि न
न य र वि क्ता न य आ म य ना (५) जन नि ज य नि (५) व र्ज ता न य सी द ॥ ५ ॥ वा क्क गी र्थ
रु य प्र य न म गि व स र्म मा न से नो र्चि ता र्त्त वा क्क ता द वि क्क ने ४ कृत वि म स धि या
ज रु ना ज क या वि । हा मा ये र कि यूर्व कृत म यि स क र्त्त क र्म य ना यि त क्त न य
आ म य ना (५) जन नि ज य नि (५) सू च री त्वं य सी द ॥ ६ ॥ व क्क ओ य ४ व र्क र्त्त र्त्त र्त्त

यू वि वि न चि त ना द म क्त न नि र्था दं (ग गी) चि न यी त्वं न वि ग नि वि त स दी य
त ४ का म क ओ य ४ हा ना सि सि न स त्वे न लू य म व ति रि ४ यू ज या मि स्म ना र्त्त न य आ
म य ना (५) जन नि ज य नि (५) र्त्त स ना (५) य सी द ॥ ७ ॥ र्त्त म्मा दी न य र्त्त र्त्त र्त्त त द वि
म न र्त्त त च्चा त्त्त त्व धि या क र्त्त ग की सा य न क्त त कि म यि स र्त्त म य र्त्त त्व वि श्रा मि
का मी । त ज्जा ता वा स ना त ४ क्त मिति न म या रा वि ता र्त्त नि गू र्त्त न य आ म य ना (५)
जन नि ज य नि (५) त त्व वि श्र य सी द ॥ ८ ॥ य द्वा का न न क्ता ता ह नि न यि स त र्त्त र्त्त र्त्त

गिते रुयमये ४ कासादनीये निति १ वृद्धा ग कनेते कयातनूवच धिते म
न ४ सद्यतां नित्या न च मयी सूत्र म्य न ग नी ग्री म कूनी नागनी ॥ १२ ॥ देव का
यासिका दोष्टुतिमत निचय वेष्टुव सोनतावा जेव सोन ग लग युष्टुतिमत
चय रुकि मा र्ग गुभा द्या १ निदिष्ट कोलिकत समय विधिमत नित्यने सिति
काय ४ कूर्वाली नेव चर्चा तव यदग नर्त्त या हिमां दी न ता ॥ १४ ॥ काय का
लीचता नावच सिचरुतन छिन्न मस्त सूत्र य ग्री विद्यावन्ध कार्य रुवसिच

वगता सिद्धि लक्ष्मी पुसिद्ध १ मातृ नी वाम मा र्ग स्थिति विधिक मला रुष्टुव व
तानी काम गी काम रा ग रुज २ जगती वायिनी मा दिग किं ॥ १५ ॥ मयती वेदि
कानां जल निधितन या वेष्टुवानी महनी मादगानां धनार्था रुवसिमत वि
यानिनां सोनतानी ॥ वदाहि वकु यूवा नियति निति पून हृदि मी मां सकातां न
यक्षाम यना ॥ जननि जयनि ॥ सर्व मा र्ग र्ग क सद्य ॥ १६ ॥ तादृक् वी ॥ १० ति
नम्य तव हिच नलाया ४ यवृ काल यिकाति यवर्क र यु मा दा दति कस

तितया नेव पूजाय कायि । ॐ लंकार्ये न न । मयि विहितम् वा व न न मा
विदध्या जात तादृक् पूरु न रुवति गुरु द जागु मान ४ कू माता ॥ १० ॥ मद्यु चो
माय रुदे र्जन नि जगति य को तिका म्वा र्ज न न ग र्वा व क्क म्म सिद्धि विरु न ति
सन सैत्य च सा दा ल्क ना य । न न त्वा म्म मि क न रुति न यिन त धा व रुति वा कू पु
रु न सैता व ४ स्या य यात नि ग द ति त दि दं रु व ति ४ ग्री य ता व ४ ॥ १० ॥ द द्वा ग्
र्या क म्म ल वा य द क न न ये ने र्वा य क रु त्व ग म्म ४ वात म्म द्वा द्वा सा य य ति नि

प्राप्त

गमयितुं काचित् वा कर्तुं वा ॥ श्रुत्वा सा दासना वा युज्यते वचसा देवता वा
 ह्यथवा तत्सर्वं भयनाथं यत्रिह न कर्तुं वा त्रिध सिद्धि कालि ॥ १६ ॥ ० ॥
 कृतिग्रीयता यमस्य ह्यपवित्रचितं सर्वोपनाथस्यैव समाया ॥ ॥ ॥

१. त्रिवर्ग २. यज्ञार नक्षत्रविकार ३. नक्षत्रविकार ४. एतत्सर्वं क ५. श्रुत्वा सा दासना वा युज्यते वचसा देवता वा
 १. वसुसं २. तासुलसं ३. सकतय ४. १०. दृष्टिकर्त ५. १. मुनिक २. वलिक ३. मुकुलसं ४. १४
 १. योनिडावर्ग २. १०. वसुवत्रिचुद ॥ ॥ हावनिद ॥ नामसकम ४ ॥ ॥ स्वदान न ॥ नामसकम

१. वासादियथा कमलालना नामदणम ४ ॥ ॥ मदनैविकोदण ४ ॥ ॥ नाठिसकासनरावता ॥
 १. चक्रावर्गनामदण ॥ ॥ मदनारि सुखाव १३ ॥ ॥ विषयविकारनाम १४ ॥ ॥
 १. ससद्वचनानि सफ ॥ ॥ सिगनानिदस ॥ ॥ दणनयदा यष्ट ॥ १२ सकदस ४ ॥ ॥
 १. कृतिग्रीयता यमस्य ह्यपवित्रचितं नागवक सर्वैस्सूतादयानामाहम ४ यत्रिचुद ४
 समाया ॥ ॥ चक्रावर्गनामदण ॥ ॥

१. सुद्विद्विकर्तृणां मयचितं दिवा सयया चितं या नीकु ४ समूना मूनेध मनेज ४
 संस विग सर्वदा ॥ उद्योगकि विदयनं निवमिति ज्ञानागम ४ वसुदं यमुर्ज
 सुद्विद्विकर्तृणां

तिलरुक्तिं भिवयदं तु किंच मुक्तिं यत्र ॥ मांसं भिवं मूत्रागकीलुकाकोरुतव
 भिवं । सदा ह्यस्य यत्रागकिं ज्ञानं मां कु उच्यते ॥ न दोषो त्वं साको ल्वमसि
 अयं किं प्रहृतयः त्वमवर्णी कलुषं मसि वनवाली रगवती । त्वमवाक्ष विंश
 त्वमकल यथा नन्द जननी त्वमू ~~कलुषं~~ कलुषं जननी जगती त्वदिस कलं ॥
 त्वं लक्ष्मी त्वववाली त्वमसि मित्रिणा त्वं महा काल जाला त्वं वाला रेलवी त्वं त्वमसि
 भवत का मूदनी त्वं यत्राख्या । यूलु त्वं निगनी त्वमसी रगवती कूटिका गुफकाती
 ताना त्वं चिन्महा त्वमसि वरु विधा सिद्धि लक्ष्मी प्रसिद्ध ॥

३ तमा काल रेलवाय ॥ कत्र कलिन कया ल कलुली दलु वाली लनू लति मित्रनी ल वा ल
 यहा यवीन । कुतू स मय सय र्या विद्यु विक्क दह तु र्ययति वरु नाथ ॥ सिद्धि द ॥ साध कानां ॥ १ ॥
 १ अनिल काम ल कलु ल न क वलु वंद कत स्मित मना हि मूखा न विन्द ॥ कल्या न दं दलु कम ति
 य कया लया ली व न्य महा वरु क नाथ मरि छ सिद्धि ॥ सु द्यो वाच ॥ यत्र मूत वेता ल कल ता ल
 सम चित्तं ॥ वर्यते त मरु न्द र्य कलय काल रेल व ॥ कया ल मालिका कानं कल या व कलो चनी
 कया ल कल म र्गु कलय ॥ वाल गनू पु ग को ल निर्य को म ल कू कल ॥ धनू दलु कया ला लु
 कलय ॥ दिगं वरु जय वलु जना म न ल वरु जित ॥ चानू च न्यु जय कूट कलय ॥ मूना नी वन वा वा
 मि सून के व न नी त ल ॥ भिव कग व था री क कलय ॥ मनि या दा लु या दा क म हा गल

कर्नञ्जुर्कथाकं चूकमाकर्तकलयः॥ दर्विकालगुणः प्राकं कि किलीमखलाचिर्तः॥
 गदा लन्तिजगत्तर्न कलयः॥ यस्याङ्गा जगत्सर्वस्मवर्नजगमाचिर्तः॥ वद्धत निरुये
 निरुये कलयः॥ १०॥ यद्देकालनाथस्य य १० रुक्मिष्ठकेयथा। सप्तवसरतकागी प्र
 यागं जगयातथा॥ ११॥ तदस्य दश गमने यूना विष्णु धनदर्शनं। मूयाने सप्तमिष्ठ
 चकालनाथ युयुति॥ १२॥ वानाग स्यात्ते सवा दवा संसात्रय नागतः। शूनकज
 मकृतं याये स्मनहन विनस्यति॥ १३॥ ॥ ००॥ तिकालते सवसां ॥ कलनाथ युयु
 द्धना महारि सवद वता। इह स्वप्नस्मन निरुये सप्त वउ यजायत॥ ॥ श्रीते सवाय॥

१ स्मनकादया यागी द्या नृयैष यस्तथा। वृद्धा दद्या विष्णुका हनूमन सिद्धे वन॥ वायू
 पूरा महाबाहा किर्तव्यं वृद्धा दीना नृक्षी दग्धे नालिखं स्मृति नृक्षी दग्धे यवि॥ वृद्धे दग्धे
 मुषु सर्वस्व सविद्या सूर्य। सर्वस्व विष्णु रिश्वन यू विष्णु सूर्ये गिर्गकि वृक्षान् यमः कितल कथय
 त्वं महावल॥ ॥ हनूमान् वाच॥ लाला या निद्रा जयथा विष्णुका गये वचनं ॥ वृद्धं मामकी वाचं
 रुगर्वे धकिना गिनी॥ ॥ नृक्षे व सर्वस्व त्वच वृद्धता लके। नामेव यनं वृद्ध नामेव यनं ॥ नामे
 व यनं त्वे श्री नामा वृद्धता नके॥ वायू पूरा लाला या निद्रा जयथा विष्णुका १४ पून ययुद्धन
 हनूमते नाम स्यां गिना वृद्धि हनूमत्सहा वाच॥ ॥ वायू पूरा विष्णु वाणी दृष्टं किं वा
 लं सूर्य चन्द्र ताना यनं तान सिद्धे वासुदेव वनाह मया कां सि सदीन मकुल श्री सीताल
 कर्तं हनूमते हनते गदुर्ध्व विही वलं मृगी व मंगदं जामि वेनं प्रलेप्ता वतान्

नामस्मिन्मानजानीतामानवितानामाविद्युक्ताएवतिष्ठनवायुवृक्षताकार्म
 हनूमन्वैवयेचुं नाजनयमहावलविद्युत्ताएवतिष्ठनवायुवृक्षताकार्म
 दिति॥ यूननूवोचहनुमान॥ श्रुत्याद्यानगत्रनम्यसमासीतानामामयावृक्षता
 यतयागीमानसविद्युत्ताएवतिष्ठनवायुवृक्षताकार्म॥ महावाच॥ नोमा
 यथासम्यक्धीकोपावक्तुं। तस्यापुनवस्याधिकानस्यानान्येषीयुतवैकवलमकान
 उक्तामकानमर्द्धमात्रसहितमजयाथासमचर्द्धमर्द्धजयतिनस्यागुरुकनारुस्यागुत
 स्मीयुतवस्यावाकानस्यावाकानस्यमकानस्यजार्द्धमकानस्यचअभिचुंयादवेतातलि
 वल्लुवर्द्धमर्द्धमर्द्धनवनवेदामिगुत्ताएवतिष्ठनवायुवृक्षताकार्म॥

॥ ति॥ नाममकुमाद्यंतयुतवैवाजयतंसनामारुवदिति॥ नामनाकसुस्मादामांगयुतव॥ क
 थितवायुवृक्षताकार्म॥ यूननूवोचहनुमान॥ श्रुत्याद्यानगत्रनम्यसमासीतानामामयावृक्षता
 सहस्रालिसंरुतवाकालिसकसहस्रालिनद्यानिपुचगतायूननूवोचविरीषलसुगव्याग
 काय॥ किंकेनातिनीसहावाच॥ नाम॥ वैवासलकैमर्द्धमाद्यंतयुतवैममैकुद्विगुल॥ युत
 वाथाजयतंसम्ययवर्द्धमर्द्धनवनवेदामिगुत्ताएवतिष्ठनवायुवृक्षताकार्म॥
 यथासिद्धमसहस्रालिउदेकावृक्षताएवमनूकुर्मैज्ञावाकतकुत्थारुवदिति॥ हनुमन्
 लिखत॥ ०॥ ॥ हनुमान्वाच॥ सिरासनसमासीतनामयालस्यनूदन॥ युतम्यदेउ
 वनूहमोयोतयोवाकमवुवीत्॥ नयूनाथमहावाहाकेवल्यकथितमया॥ श्रुता

नमो नैवेद्ये व कथनीयं च सोत्तरं ॥ श्रीनाम उवाच ॥ अथ ये च दंतु का ४ विदुषा तु म
 ध्वा जीना गुनान् क क का टि यति ध्वा न क कृत या या या म म व न व तिका टि नामा निज य
 तित ४ या य ४ पु म् च त सु य म व स वि दान न्या न द सु न या रु व न कि ॥ ५ ॥
 पुन नू वा च क क ग य ४ सु ग य ग का य न कि कू र्वा ती ति स हा वा च ॥ नामा थ गि लि य द्या लि ११
 पुन पुन (ल कि वा व ग का) याम म गी ता मे वाम स रु स म द्वि य नू य च ॥ म द द्या रु व न
 ता रि ध्वा न नान दा के सु व ना ज द नू स दु क मे रु ना जा स क सु र्व सी ता सु र्व नाम ल
 म् ॥ द्या दि हि सु वे न ते धा मा नि ल्य मो ति से म म द (म रु व न कि रु व न कि सि ति ४)
 ॥ ६ ॥ अर्थ व ल न रु स्य नामा य ति ४ सु मा क ४ ॥ श्रीनाम चंदु ॥

पुन नू वा च वि ली म